

डॉ. गैरी येट्स, पुस्तक 12, सत्र 13, इस्राएल की आध्यात्मिक बेवफाई, भाग 1, होशे 4-14, भाग 1

© 2024 गैरी येट्स और टेड हिल्लेब्रांट

यह डॉ. गैरी येट्स की पुस्तक 12 पर उनकी व्याख्यान श्रृंखला है। यह व्याख्यान 13 है, इस्राएल की आध्यात्मिक बेवफाई, होशे 4-14, भाग 1।

होशे की पुस्तक के हमारे अध्ययन ने अब तक पुस्तक के पहले तीन अध्यायों पर ध्यान केंद्रित किया है, जहाँ हमारे पास होशे और गोमेर के विवाह का यह शक्तिशाली रूपक और छवि है जो यहोवा और इस्राएल के बीच के रिश्ते का प्रतिनिधित्व करती है। जिस तरह से गोमेर होशे के प्रति बेवफा था, और फिर भी परमेश्वर ने उसे इस महिला से प्यार करने और उस रिश्ते को बहाल करने का आदेश दिया, परमेश्वर इस्राएल के साथ अपने वाचा के रिश्ते को उनकी आध्यात्मिक बेवफाई के बावजूद और इस तथ्य के बावजूद जारी रखेगा कि उन्होंने उससे उस तरह से प्यार नहीं किया जैसा उन्हें करना चाहिए था।

इसके बजाय, उन्होंने इन दूसरे देवताओं से प्रेम किया और उनकी सेवा और भक्ति की। रूपक हमें अध्याय 1 से 3 में दिया गया है। यह वास्तव में पुस्तक के बाकी अध्यायों, अध्याय 4 से 14 के लिए मंच तैयार करता है, जहाँ हमें लोगों को होशे के उपदेश और इस बात की बारीकियों के बारे में अधिक जानकारी मिलती है कि उन्होंने किस तरह से प्रभु के खिलाफ बेवफाई की है। अब हम पुस्तक के अपने अध्ययन में उन बारीकियों और उन विवरणों की ओर मुड़ने जा रहे हैं और यह जानने जा रहे हैं कि होशे का उपदेश और संदेश किस बारे में था।

इससे पहले कि हम ऐसा करें, मैं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और ऐतिहासिक विवरण के बारे में कुछ बातें बताना चाहूँगा जो मुझे लगता है कि पुस्तक और उसमें दिए गए संदेश के बारे में हमारी समझ को बढ़ाएँगी। अमोस के हमारे अध्ययन में, हमने असीरियन संकट और 745 ईसा पूर्व में नव-असीरियन साम्राज्य के उदय, तिग्लथ-पिलेसर और अंततः 722 ईसा पूर्व में इज़राइल के पतन के बारे में बात की। मैं इस दौरान इज़राइल के आंतरिक इतिहास के बारे में बस कुछ बातें बताना चाहूँगा।

होशे की पुस्तक की शुरुआत में जो उपशीर्षक या संकेतन मिलता है, उसमें लिखा है, "...यहोवा का वचन जो बेरी के पुत्र होशे के पास उज्जियाह, योताम, आहाज, यहूदा के राजा और योआश के पुत्र यारोबाम, इस्राएल के राजा के दिनों में आया।" जब हम उपशीर्षक को देखते हैं तो यह दिलचस्प लगता है कि संदर्भ मुख्य रूप से दक्षिण में यहूदा के राजाओं के लिए है, जबकि हम जानते हैं कि होशे ने उत्तर में अपनी सेवकाई की थी। यह इस तथ्य से भी पता चलता है कि हमारे पास राजा आहाज और हिजकिय्याह का उल्लेख है, कि होशे की सेवकाई 722 और 721 में उत्तरी राज्य के पतन के समय के बाद भी जारी रही। इसलिए, ऐसा लगता है कि इस्राएल के पतन के साथ, होशे दक्षिण की ओर पलायन करने जा रहा है और वह वहाँ अपनी सेवकाई जारी रखेगा।

जब उपरिलेख उत्तरी राज्य के बारे में बात करता है, तो इसमें केवल इस्राएल के राजा योआश के पुत्र यारोबाम द्वितीय का उल्लेख होता है। वास्तव में यारोबाम द्वितीय के बाद कई राजा हुए। तो, सवाल उठता है: हमारे पास केवल यारोबाम और यहूदा के इन सभी राजाओं का उल्लेख क्यों है? मुझे लगता है कि इसका सबसे सरल उत्तर यह है कि यारोबाम के बाद आने वाले राजा बस महत्वपूर्ण नहीं हैं।

यारोबाम द्वितीय ने 40 से ज़्यादा सालों तक राज किया था। उसने इस्राएल की सीमाओं और सीमाओं को बहाल किया था। उसने बहुत समृद्धि लाई थी।

लेकिन उसके बाद जो राजा आए, वे सभी कमज़ोर और अप्रभावी शासक थे। इज़रायल में जो हुआ, वह यह है कि राजशाही भी अराजकता और हिंसा में डूबी हुई है। कई तख्तापलट हुए हैं, जहाँ एक कमज़ोर राजा की जगह दूसरे ने ले ली।

752 में इस्राएल के राजा मनहेम के समय से लेकर अब तक, ये सभी राजा अंततः अशूरियों के अधीन होने जा रहे हैं। उस अवधि में जो राजा हैं, वे अक्सर अशूर के खिलाफ विद्रोह करने का मूर्खतापूर्ण निर्णय लेने जा रहे हैं। उनमें से कोई भी योजना, षड्यंत्र, गठबंधन कभी काम नहीं करने जा रहा है।

लेकिन यारोबाम द्वितीय के शासनकाल के बाद, हमें जकर्याह का शासन मिला। जकर्याह ने छह महीने तक शासन किया और शालेम के नेतृत्व में एक तख्तापलट में उसकी हत्या कर दी गई। शालेम को एक महीने तक शासन करने का विशेषाधिकार मिला था।

लेकिन 752 ईसा पूर्व में जकर्याह की मृत्यु के साथ ही यहू के घराने और यारोबाम द्वितीय के राजवंश का अंत हो गया। शालेम ने एक महीने तक शासन किया। उसे मार दिया गया और उसकी जगह मनहेम ने ले ली, जिसने दस साल तक राजगद्दी संभाली, लेकिन वह असीरियन का जागीरदार बन गया।

पेकाहियाह दो साल तक राजगद्दी पर रहा। पेकाह के नेतृत्व में एक तख्तापलट में उसकी हत्या कर दी गई। पेकाह राजगद्दी पर आता है और असीरियन सेना और साम्राज्य के हमले का सामना करने के लिए असीरियन के साथ गठबंधन बनाने का प्रयास करता है।

लेकिन यह काम नहीं आया। उसे बदल दिया गया। होशे दस साल तक राजगद्दी पर रहा।

8वीं शताब्दी में इजराइल में राजा बनना, राजशाही के रूप में, किसी भी व्यक्ति द्वारा की गई सबसे खतरनाक नौकरियों में से एक थी। मैं 8वीं शताब्दी के इजराइल में राजा बनने के बजाय नाइट्रोग्लिसरीन टुक चलाना पसंद करूंगा क्योंकि वहां अराजकता, भ्रम है। लोग एक नए नेता की तलाश कर रहे हैं, कोई ऐसा व्यक्ति जो उनकी मदद करे, कोई ऐसा व्यक्ति जिसके पास उन्हें बचाने के लिए सैन्य संसाधन या प्रतिभा हो।

उनकी समस्या राजनीतिक नहीं है। उनकी समस्या आध्यात्मिक है। उन्हें किसी नए शासक और नए राजा की ज़रूरत नहीं है।

उन्हें यहोवा को अपना राजा मानकर उसकी ओर मुड़ना चाहिए और यह पहचानना चाहिए कि वह ही उन्हें बचा सकता है, अगर वे सिर्फ उस पर भरोसा करें और अगर वे वैसा जीवन जिएँ जैसा परमेश्वर चाहता है। होशे इस संस्कृति और इस संदर्भ में रहता है, इसलिए अध्याय 4-14 के उपदेश में कुछ अंश हैं जहाँ होशे हिंसा और अराजकता को संबोधित करने जा रहा है जो इन विभिन्न राजवंशों और इन तख्तापलटों में शामिल थी जो इज़राइल के अंत के समय हो रहे थे। अध्याय 7, श्लोक 4-7 में, वह यह कहता है: इज़राइल के लोग, वे सभी व्यभिचारी हैं।

वे सभी एक गर्म भट्टी की तरह हैं, जिसका बेकर आटा गूंधने से लेकर खमीर उठने तक आग को हिलाना बंद कर देता है। हमारे राजा के दिन, राजकुमार शराब की गर्मी से बीमार हो गए। उसने उपहास करने वालों के साथ अपना हाथ बढ़ाया, क्योंकि एक भट्टी जैसे दिल के साथ, वे अपनी साज़िश के लिए आगे बढ़ते हैं, और पूरी रात उनका गुस्सा सुलगता रहता है।

सुबह के समय यह धधकती हुई आग की तरह जलती है। वे सभी भट्टी की तरह गर्म होते हैं, और अपने शासकों को भस्म कर देते हैं। उनके सभी राजा गिर गए हैं, और उनमें से कोई भी मुझे नहीं पुकारता।

हमारे यहाँ हत्या, षड्यंत्र और षडयंत्र, जकर्याह की मृत्यु, शालोम की मृत्यु, पेकाह की मृत्यु, इन निरंतर तख्तापलटों का कारण यह है कि लोगों में सत्ता की लालसा समा गई है और वे चरम उपायों पर चले गए हैं क्योंकि ईश्वर पर भरोसा करने के बजाय, वे खुद पर भरोसा कर रहे हैं और उन्हें एहसास है कि वे जो कर रहे हैं वह काम नहीं करने वाला है। होशे एक ऐसी संस्कृति प्रस्तुत करता है जहाँ अधिकार के पदों पर बैठे लोग सत्ता के लिए तीव्र जुनून से भरे हुए हैं, यहाँ तक कि वे सिंहासन हासिल करने के लिए हत्या और हत्या करने तक को तैयार हैं। एक राजकुमार नशे में धुत हो जाता है, वे हत्या और हत्या करते हैं, वे एक साज़िश में शामिल हो जाते हैं, और फिर हम पलट जाते हैं, और उनके साथ भी यही होता है।

होशे का कहना है कि यह इन लोगों के समग्र धर्मत्याग और व्यभिचार का लक्षण है क्योंकि वे परमेश्वर पर भरोसा करने के बजाय अपने नेताओं पर भरोसा कर रहे हैं। वे सत्ता की इस इच्छा से ग्रस्त हैं और यही चल रही चीज़ों का हिस्सा है। अध्याय 8 इसी मुद्दे को संबोधित करने जा रहा है।

अध्याय 8, श्लोक 4 में कहा गया है, उन्होंने राजा बनाए, लेकिन मेरे द्वारा नहीं। उन्होंने राजकुमारों को नियुक्त किया, लेकिन मुझे इसकी जानकारी नहीं थी। अपने चांदी और सोने से उन्होंने अपने विनाश के लिए मूर्तियाँ बनाईं।

इज़राइल में राजनीतिक षडयंत्र, लगातार तख्तापलट और षड्यंत्र होते रहते हैं, राजनीतिक षडयंत्र उनके मूर्तिपूजा की तरह ही यहोवा से विमुख होने का लक्षण है। राजाओं को चुनने और उनका चयन करने का काम स्वयं प्रभु का था। ऐसा नहीं हो रहा है।

भगवान इसे स्वीकार नहीं करते। भगवान इसे मंजूरी नहीं देते। भगवान इन विभिन्न राजवंशों को नहीं बढ़ा रहे हैं।

यह लोगों के स्वार्थ, वासना और बेवफाई का हिस्सा है, और यह लोगों में और उनके धर्मत्याग और उनकी मूर्तिपूजा में इन षड्यंत्रों और षडयंत्रों के साथ शीर्ष तक परिलक्षित होता है। यह होशे की पुस्तक की पृष्ठभूमि का हिस्सा है और इस सब में जो कुछ हो रहा है उसके इतिहास का हिस्सा है। जैसे-जैसे हम अध्याय 4 से 14 तक जाते हैं, इस पुस्तक के साथ मेरे सामने आने वाले संघर्षों में से एक, और फिर से, यह भविष्यवाणी और भविष्यवाणी की पुस्तकों को जिस तरह से प्रस्तुत किया गया है, उस पर वापस जाता है, यह है कि इसकी व्यवस्था और संरचना को निर्धारित करना अक्सर मुश्किल होता है।

जैसा कि आप अध्याय 4 से 14 पढ़ रहे हैं, अगर आपने ऐसा किया है, तो आप जानते हैं कि कई बार तर्क एक तरह से चक्राकार हो जाता है क्योंकि पैगंबर बार-बार इन्हीं मुद्दों पर वापस जाते दिखते हैं। हम देखेंगे कि उनमें से कुछ प्रमुख विषय क्या हैं, लेकिन हम एक संरचना कैसे निर्धारित करते हैं? ये किताबें उन किताबों की तरह दोबारा नहीं पढ़ी जातीं जिन्हें हम आम तौर पर पढ़ते हैं। हमारे पास विषय-सूची की कोई अच्छी तालिका नहीं है।

हमने उन्हें किंडल पर अपनी पुस्तकों की तरह अनुभागों में व्यवस्थित नहीं किया है। हमारे पास कोई कालक्रम नहीं है। यह संदेश हमें पैगंबर के संदेश के पहले दिन और पहले वर्ष से लेकर उनके अंतिम शब्दों और उनके समापन संदेश तक नहीं ले जाएगा।

भविष्यवक्ता की सेवकाई के विभिन्न समयों के संदेश एक साथ जोड़े गए हैं। हमारे पास उनके उपदेशों का एक संकलन है। जाहिर है, होशे की सेवकाई एक लंबी थी जो निश्चित रूप से उन शब्दों से परे है जो हमें इस एक पुस्तक में इन अध्यायों में मिलते हैं।

तो, हम संरचना को कैसे समझते हैं? मैं यहाँ जो संरचना बताने जा रहा हूँ, वह डॉ. बॉब चिशोल्म ने माइनर प्रोफेट पर अपनी टिप्पणी में बताई है। वह अध्याय 4 से 14 को एक श्रृंखला के रूप में देखते हैं जिसे हम वाचा के मुकदमे कहते हैं। वाचा का मुकदमा भविष्यवाणी की पुस्तकों में एक प्रमुख शैली है।

हम उनमें से एक को मीका की पुस्तक, अध्याय 6 में देखेंगे। लेकिन वाचा के मुकदमे में क्या होता है कि भविष्यवक्ता अदालती मामले की पृष्ठभूमि बनाता है, और परमेश्वर न्यायाधीश है। भविष्यवक्ता अभियोक्ता वकील है। जब भी न्यायाधीश और अभियोक्ता वकील एक साथ काम कर रहे होते हैं तो प्रतिवादी मुश्किल में पड़ जाता है।

प्रतिवादी इस्राएल के लोग होंगे। इन अदालती मामलों में, भविष्यवक्ता लोगों को अदालत में ले जाएगा। वह उन्हें परमेश्वर की वाचा की वफ़ादारी की याद दिलाएगा, लेकिन उन पर विश्वासघात का आरोप भी लगाएगा।

इनका वर्णन करने के लिए अक्सर जिस शब्द का इस्तेमाल किया जाता है वह हिब्रू शब्द रिब है, जिसका अनुवाद मुकदमा या विवाद या विवाद के रूप में किया जा सकता है। इसे बहुत ही

औपचारिक कानूनी तरीके से प्रस्तुत किया जाएगा। मुझे लगता है कि इस शैली का उद्देश्य, फिर से एक रूपक के रूप में, लोगों के लिए अदालत में लाए जाने और भगवान के सामने खड़े होने और उनकी वाचा की बेवफाई के लिए कानूनी तरीके से आरोपित होने की छवि बनाना है।

होशे की पुस्तक में, इस्राएल एक विश्वासघाती जीवनसाथी है। उन्होंने प्रभु के विरुद्ध व्यभिचार किया है। मुझे लगता है कि जिस तरह से हम अध्याय 4 से 14 की कल्पना कर सकते हैं, वह यह है कि यहाँ औपचारिक कानूनी कार्यवाही है जो उनके अपराध को स्थापित करती है।

व्यभिचार और बेवफाई के आरोप के प्रति इस्राएल के लोगों की प्रतिक्रिया शायद कुछ इस तरह की रही होगी। होशे, हम समझ नहीं पा रहे हैं कि तुम किस बारे में बात कर रहे हो। हमारे पास अभी भी हमारे पवित्र स्थान हैं।

हमारे पास अभी भी गिलगाल, बेथेल है। हम अभी भी अपने धार्मिक कर्तव्यों का पालन कर रहे हैं। आप हम पर प्रभु के प्रति विश्वासघात करने का आरोप कैसे लगा सकते हैं? हम अपने आस-पास के बुतपरस्त लोगों की तरह नहीं हैं।

हम सच्चे परमेश्वर को जानते हैं। हम यहोवा में अपने विश्वास को स्वीकार करते हैं, लेकिन समस्या यह थी कि वे अपने आस-पास के मूर्तिपूजक लोगों की तरह ही बन गए थे। इसलिए, औपचारिक रूप से, भविष्यवक्ता होशे के संपूर्ण संदेश और मंत्रालय को औपचारिक कानूनी जिम्मेदारी के रूप में रखा गया है।

इन वाचा मुकदमों में, अक्सर गवाहों को अदालत में लाया जाता है। प्रभु स्वर्ग और पृथ्वी को बुलाता है। वे मूसा के दिनों में वाचा की स्थापना के साक्षी हैं।

अब उन्हें अदालत में लाया जा रहा है। आइए सुनते हैं कि पिछले पाँच से छह सौ से सात सालों में क्या हुआ है। इस्राएल ने वाचा का पालन कैसे किया है? पैगंबर औपचारिक रूप से उनकी बेवफाई के लिए उन पर अभियोग लगाएंगे।

होशे की पुस्तक में, हमारे पास वास्तव में तीन अलग-अलग वाचा मुकदमे हैं। इनमें से प्रत्येक मुकदमे की संरचना ऐसी है कि उनमें अभियोग शामिल होगा। यहाँ औपचारिक आरोप दिए गए हैं।

याद रखें, भविष्यसूचक न्याय भाषणों में आरोप और घोषणा दोनों शामिल होंगे। फिर, न्याय की घोषणा होने वाली है। ये वे विशिष्ट चीजें हैं जो परमेश्वर आपके साथ करने जा रहा है।

इन तीन अलग-अलग मुकदमों में हमेशा अभियोग होता है, हमेशा आरोप होता है, और हमेशा घोषणा होती है। इनमें से कुछ खंडों में, पैगंबर आगे-पीछे होने जा रहा है। यहाँ आपने क्या किया है।

यहाँ वे तरीके दिए गए हैं जिनसे आप परमेश्वर के प्रति विश्वासघाती रहे हैं। अब, यहाँ घोषणा है। यहाँ वह न्याय है जो इसके परिणामस्वरूप होने वाला है।

लेकिन इन वाचा के मुकदमों में जो कुछ भी है, और मुझे लगता है कि होशे की संरचना को देखते हुए यह दिलचस्प है, कि ये तीनों मुकदमे, उनमें से प्रत्येक, आशा और बहाली के वचन के साथ समाप्त होने जा रहे हैं। फिर से, हम एक भविष्यवक्ता की दोहरी भूमिका की संरचना में भी देखते हैं। एक भविष्यवक्ता की दोहरी भूमिका लोगों को परमेश्वर के न्याय की घोषणा करने के लिए दोषी ठहराना था, लेकिन साथ ही न्याय समाप्त होने पर उन्हें बहाली का वादा करना था।

होशे 1-3 में, न्याय और पुनर्स्थापना का क्रम और योजना होशे के बच्चों के नामों में रखी गई थी। यिज़्रैल, परमेश्वर न्याय बोन जा रहा है, लेकिन फिर परमेश्वर इस्राएल को भूमि में वापस बोन जा रहा है। लो-रूहामा, दया नहीं की गई।

खैर, जिन लोगों पर परमेश्वर दया नहीं करता, उन्हें दूर भेजते समय, अंततः, वह उन पर दया दिखाएगा। लो-अम्मी, जो लोग खंडित वाचा के कारण अब परमेश्वर के लोग नहीं हैं, वे एक बार फिर परमेश्वर के लोग बन जाएँगे। इन वाचा मुकदमों में, जैसा कि होशे 4-14 में तीन चक्रों में बताया गया है, अभियोग है, आरोप है, घोषणा है, लेकिन फिर आशा की पेशकश है।

आइए पहले वाले पर नज़र डालें। यह पहला वाचा मुकदमा होशे अध्याय 4 से लेकर होशे अध्याय 6 पद 3 तक फैला हुआ है। अध्याय 4, पद 1, अध्याय 6, पद 3। यह पहला चक्र है, पहला वाचा मुकदमा। यहाँ इसकी शुरुआत में अभियोग है।

पद 1-3 को सुनो। हे इस्राएल के बच्चों, यहोवा का वचन सुनो, क्योंकि यहोवा के पास एक विवाद है। ईएसवी में इसका अनुवाद इसी तरह किया गया है।

यह हिब्रू में पसली शब्द है। प्रभु के पास एक पसली है, जो देश के निवासियों के साथ विवाद है। देश में न तो कोई विश्वासयोग्यता है, न ही दृढ़ प्रेम, न ही परमेश्वर का ज्ञान।

इसमें शपथ लेना, झूठ बोलना, हत्या करना, चोरी करना और व्यभिचार करना शामिल है। वे सभी सीमाओं को तोड़ते हैं, और खून-खराबे के बाद खून-खराबा होता है। मोजेक टोरा के केंद्रीय दस आज्ञाओं में से पाँच का उल्लेख यहाँ किया गया है, और इसलिए यह एक औपचारिक अभियोग है।

कल्पना कीजिए कि आपको कोर्ट रूम में लाया गया है। मैं ट्रैफिक अपराधों के लिए कोर्ट में गया हूँ और यह एक बहुत ही तनावपूर्ण बात है। जज के सामने खड़ा होना एक डरावनी बात है।

कल्पना कीजिए कि जब वह न्यायाधीश स्वयं ईश्वर हो। लोगों को इसकी गंभीरता को समझने की आवश्यकता है। उन पर आरोप लगाए जा रहे हैं, और कानून की विशिष्ट शर्तें निर्धारित की गई हैं।

यह आरोप अध्याय चार से अध्याय पाँच तक चलेगा। यहाँ विशेष रूप से इस्राएल के नेताओं पर आरोप लगाया जाएगा। लोगों द्वारा कानून का पालन न करने के लिए पुजारी मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं क्योंकि देश में परमेश्वर का ज्ञान नहीं है।

उन्होंने लोगों को उनके वाचा के दायित्वों को सिखाने की अपनी जिम्मेदारी पूरी नहीं की है। इसके परिणामस्वरूप, पुजारी न्याय का कारण बन गए हैं, और उन्हें इस पहले भाग में विशेष रूप से लक्षित किया गया है। यह अध्याय चार से शुरू होता है, यह अध्याय पाँच तक विस्तृत होता है, और इस अभियोग के अंत में, अध्याय पाँच की आयत पंद्रह में प्रभु कहते हैं, मैं अपने स्थान पर फिर से लौटूंगा जब तक कि वे अपने अपराध को स्वीकार न कर लें और मेरा चेहरा न देखें, और अपने संकट में ईमानदारी से मेरी तलाश न करें।

लोग परमेश्वर द्वारा उन्हें न्यायालय में लाए जाने पर प्रतिक्रिया नहीं देने वाले थे। परमेश्वर को अंततः उनका न्याय करना ही था। इन न्यायालयों की प्रत्येक कार्यवाही में, और मुझे लगता है कि वाचा के मुकदमों के बारे में यही दिलचस्प बात है, प्रभु केवल उन पर अभियोग नहीं लगाते और उन्हें सज़ा नहीं सुनाते।

आमतौर पर, इन औपचारिक कार्यवाहियों में जो होता है वह यह है कि परमेश्वर अभी भी उन्हें पश्चाताप करने के लिए प्रेरित कर रहा है। इसलिए, यह केवल इतना नहीं है कि हम आपको अदालत में ले आते हैं, आप दोषी हैं, यहाँ आपका आरोप है, पास न हों, सीधे जेल जाँ। परमेश्वर अभी भी उन्हें पश्चाताप करने का अवसर दे रहा है।

समस्या यह है कि इज़राइल इसका लाभ नहीं उठाएगा। वे अभी भी प्रतिवादी के रूप में विरोध कर रहे हैं। आप किस बारे में बात कर रहे हैं? मैं निर्दोष हूँ। मैं अपने मामले की अपील करना चाहता हूँ।

इसलिए, अध्याय पाँच, श्लोक चार में, उनके कर्म उन्हें परमेश्वर के पास लौटने की अनुमति नहीं देते, क्योंकि उनके भीतर वेश्यावृत्ति की आत्मा है; वे प्रभु को नहीं जानते। इसलिए, हमारे पास एक लंबा अभियोग है जो अध्याय चार से लेकर अध्याय पाँच तक जाता है। यह लोगों के नेताओं पर अभियोग लगाता है, यह लोगों को खुद पर अभियोग लगाता है, और वे अभी भी कहने जा रहे हैं, हम इसे नहीं समझते।

आप हम पर इन अपराधों का आरोप क्यों लगा रहे हैं? लेकिन इसके अंत में, फिर से, परमेश्वर का हृदय अपने लोगों को वापस बुलाता है; पश्चाताप करने का आह्वान है, और इसके बीच में एक वादा है कि, अंततः, इस्राएल को बहाल किया जाएगा। अध्याय छह, श्लोक एक से तीन, यह कहते हैं, आओ और हम प्रभु के पास लौटें क्योंकि उसने हमें फाड़ दिया है ताकि वह हमें ठीक कर सके। उसने हमें मारा है लेकिन वह हमें बाँध देगा।

दो दिन बाद, वह हमें पुनर्जीवित करेगा; तीसरे दिन, वह हमें उठाएगा ताकि हम उसके सामने जीवित रहें। और इसलिए, न्याय आने वाला है, और यह दो दिन का होने वाला है, और यह एक कठोर न्याय होने वाला है, लेकिन तीसरे दिन, प्रभु अपने लोगों को उठाएगा। इसलिए, इसके परिणामस्वरूप, होशे लोगों को एक उपदेश देता है।

आइए हम प्रभु को जानने के लिए आगे बढ़ें। उसका जाना भोर की तरह निश्चित है। वह हमारे पास वर्षा की तरह आएगा, जैसे वसंत की बारिश जो धरती को सींचती है। तो यह पहला चक्र है, अध्याय चार पद एक से अध्याय छह पद तीन तक।

हमारे पास दूसरा वाचा मुकदमा है जो अध्याय छह, श्लोक चार से अध्याय ग्यारह के अंत तक फैला हुआ है। तो, अध्याय छह से ग्यारह, यहाँ पुस्तक के मध्य भाग की तरह, एक और औपचारिक अदालती मामला है, एक अभियोग है, इज़राइल दोषी है, और फिर उन पर जो सजा सुनाई गई है। अध्याय छह, श्लोक चार से सात, आइए मामले की शुरुआत सुनें।

हे एप्रेम, मैं तुम्हारे साथ क्या करूँ? हे यहूदा, मैं तुम्हारे साथ क्या करूँ? तुम्हारा प्रेम सुबह के बादल की तरह है, उस ओस की तरह जो जल्दी ही चली जाती है। परमेश्वर के प्रति उनकी भक्ति सुबह के बादल की तरह है, उस ओस की तरह जो जल्दी ही चली जाती है। परमेश्वर के प्रति उनकी भक्ति पूरी तरह से क्षणभंगुर है।

इसलिए, मैंने उन्हें भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा काट डाला है, मैंने उन्हें अपने मुँह के वचनों से मार डाला है, और मेरा न्याय प्रकाश के रूप में आगे बढ़ता है। क्योंकि मैं दृढ़ प्रेम चाहता हूँ और होमबलि के बजाय परमेश्वर के ज्ञान का बलिदान नहीं चाहता। यहाँ मूल बातें हैं जो परमेश्वर उनसे चाहता है, उसके प्रति भक्ति, उसके प्रति वफ़ादारी, उसका ज्ञान जो केवल जानकारी नहीं है, बल्कि उसके प्रति प्रतिबद्धता है, यह वहाँ नहीं है।

और श्लोक 7 में यह कहा गया है, लेकिन आदम की तरह, उन्होंने वाचा का उल्लंघन किया है, और वहाँ उन्होंने मेरे साथ विश्वासघात किया है। इसलिए, वाचा का मुकदमा विशेष रूप से वाचा के मुद्दे को उठाने जा रहा है, और यहाँ एक स्पष्ट कथन है: आदम की तरह, उन्होंने वाचा का उल्लंघन किया है, और उन्होंने मेरे साथ विश्वासघात और विश्वासघात किया है। अब, मैं एक सवाल उठाना चाहता हूँ कि जब यह कहा जाता है, आदम की तरह, उन्होंने वाचा का उल्लंघन किया है; इसका क्या मतलब है? क्या हम ईडन गार्डन और उत्पत्ति 3 में आदम और हवा के पतन पर वापस जा रहे हैं? यही वह व्याख्या है जो कुछ लोगों ने इस श्लोक को दी है, और उन्होंने इसे इस बात के प्रमाण के रूप में देखा है कि सृष्टि के समय से ही परमेश्वर और आदम के बीच एक औपचारिक वाचा है।

उत्पत्ति में वाचा शब्द उत्पत्ति 6-8 में नूह के समय तक नहीं दिखाई देता है। इसलिए अन्य धर्मशास्त्रियों ने तर्क दिया है कि आदम के साथ संबंध औपचारिक रूप से वाचा नहीं है; यह कुछ ऐसा है जो पतन के बाद ही आता है, और इसलिए हम इस धार्मिक प्रश्न के साथ रह जाते हैं। अंततः, मुझे यकीन नहीं है कि यह एक बड़ा मुद्दा है।

परमेश्वर और आदम के बीच का रिश्ता निश्चित रूप से एक वाचा की तरह है। आदम के सामने कुछ दायित्व रखे गए हैं, और उससे उनका पालन करने की अपेक्षा की जाती है। उससे कुछ वादे किए गए हैं कि उसे परमेश्वर के उप-शासक के रूप में शासन करने की अनुमति दी जाएगी।

तो, आदम और हव्वा के साथ संबंध निश्चित रूप से एक वाचा की तरह निर्धारित किया गया है। क्या इसे औपचारिक रूप से पुराने नियम में वाचा के रूप में समझा गया है? मुझे यकीन नहीं है कि हमारे पास उस प्रश्न का उत्तर पूरी तरह से है। यहाँ शब्द, आदम, आदम हो सकता है, या यह सामान्य रूप से मानव जाति के लिए एक संदर्भ हो सकता है।

इस्त्राएल बाकी मानवता से अलग नहीं है। उन्होंने इसी तरह वाचा का उल्लंघन किया है। और इसलिए, इस्त्राएल, वे सोचते हैं कि वे विशेष हैं; वे सोचते हैं कि वे छूटे हुए हैं क्योंकि वे परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं, लेकिन एक अर्थ में, उन्होंने पूरी मानवता की तरह परमेश्वर के साथ वाचा को तोड़ा है।

पूरी मानवता ने नूह की वाचा को तोड़ दिया है। यह दूसरी व्याख्या है। तीसरी व्याख्या यह है कि यहाँ आदम वास्तव में किसी स्थान का संदर्भ हो सकता है।

हम ठीक से नहीं जानते कि यह कहाँ है, लेकिन हो सकता है कि वह फिर से, इस्त्राएल के पिछले इतिहास के किसी समय की ओर इशारा कर रहा हो। होशे की पुस्तक में इस प्रकार के कई संकेत हैं जिन्हें हम देखेंगे, और इसलिए यह केवल उनका संदर्भ हो सकता है, ठीक उसी तरह जैसे आदम के समय में, जब उन्होंने वाचा का उल्लंघन किया था। यहाँ आगे आने वाली आयतों में क्या उल्लेख किया गया है, इसे देखें।

उन्होंने मेरे साथ विश्वासघात किया है। और फिर यह भी कहा गया है, गिलाद कुकर्मियों का नगर है। वह खून से सना हुआ है।

जब लुटेरे किसी व्यक्ति की घात में बैठे होते हैं, तो पुजारी एक साथ मिलकर काम करते हैं। वे शेकेम के रास्ते में हत्या करते हैं। वे दुष्टता करते हैं।

इस्त्राएल के घराने में मैंने एक भयानक बात देखी है। इस्त्राएल की वेश्यावृत्ति वहाँ है, और इस्त्राएल अपवित्र है। तो, यह किस बात का संदर्भ दे रहा है? खैर, 2 राजा अध्याय 15, श्लोक 25 में, हमारे पास इस्त्राएल के अंतिम राजाओं के खिलाफ़ इन शाही षड्यंत्रों और षडयंत्रों में से एक की कहानी है।

और हमारे पास राजा पेकाह द्वारा पेकाहियाह की हत्या है, और जब वह इस विश्वासघाती कार्य को अंजाम देता है, तो उसके साथ गिलाद शहर के 50 लोग होते हैं। और इसलिए, मुझे लगता है कि यहाँ जो चल रहा है वह इस विशिष्ट घटना का एक और संदर्भ है। मुझे यकीन नहीं है कि बगीचे में आदम द्वारा वाचा का उल्लंघन करने का कोई संदर्भ है, और एक राष्ट्र के रूप में इज़राइल उतना ही हिंसक और अन्यायी हो गया है जितना कि उनके नेता हैं, जैसे नेता वैसे ही लोग।

तो, यह वाचा मुकदमे का आधार बन जाता है जो अध्याय 6 से लेकर अध्याय 10 तक अपने आप काम करेगा। अब, पहले वाचा मुकदमे में, मुझे लगता है कि एक बुनियादी संदेश है जो इस तथ्य को स्थापित करता है कि इस्त्राएल अपने पति के रूप में प्रभु के प्रति विश्वासघाती रहा है। वहाँ व्यभिचार के औपचारिक आरोप दिए गए हैं।

उन्होंने अन्य देवताओं की पूजा की, उन्होंने कानून का उल्लंघन किया, और उन्होंने ईश्वर के साथ कोई समझौता नहीं किया। इस खंड में, उनमें से कई विषय फिर से वापस आने वाले हैं, लेकिन यहाँ, उनके द्वारा किए गए कुछ राजनीतिक पापों पर अधिक ध्यान केंद्रित किया जाएगा। उन्होंने अन्य राष्ट्रों के साथ गठबंधन किए हैं, ऐसी हिंसा हुई है जिसने इज़राइल के लोगों के नेतृत्व की विशेषता बताई है, और अंततः, इससे जो संदेश निकलता है, चाहे वह उनकी मूर्तिपूजा और उनके पाप और इन अन्य देवताओं की पूजा के आध्यात्मिक पाप हों, या फिर चाहे वे राजनीतिक गठबंधन बनाने, अन्याय करने, सिंहासन के लिए हत्या करने के उनके सामाजिक पाप हों, अंततः इनमें से कोई भी काम नहीं करने वाला है।

यह कभी भी इस्राएल को नहीं बचाएगा। और इसलिए, यह एक बहुत ही गंभीर संदेश है जो होश की पुस्तक के मध्य भाग में अपना काम करता है, और यह इस कथन के साथ समाप्त होता है। अध्याय 10, श्लोक 13 में यह वाक्य है।

तूने अधर्म की खेती की है, तूने अन्याय की फसल काटी है। तूने अपने झूठ का फल खाया है, क्योंकि तूने अपने ही मार्ग पर और अपने योद्धाओं की भीड़ पर भरोसा किया है; इसलिए, तेरे लोगों के बीच में युद्ध का कोलाहल उठेगा, और तेरे सब गढ़ नष्ट हो जाएंगे। श्लोक 15: हे बेतेल, तेरी बड़ी बुराई के कारण तुझ से ऐसा ही किया जाएगा।

भोर होते ही इस्राएल का राजा पूरी तरह से नष्ट हो जाएगा। इसलिए, खून-खराबा होने वाला है। तुम परमेश्वर के मार्ग के बजाय अपने मार्ग पर चले गए हो।

आपने सैन्य गठबंधनों और राजनीतिक ताकत और अपनी सेना के आकार या जिस किसी के साथ आप गठबंधन कर सकते हैं, उस पर भरोसा किया है। इसके परिणामस्वरूप, देश में युद्ध की आवाज़ सुनाई देने वाली है। आपने अपने राजाओं पर भरोसा किया है, और आपके राजाओं ने हत्या की है और साजिश रची है और ये सभी काम किए हैं, और उन्होंने देश में अन्याय को बढ़ावा दिया है।

उन्होंने एक दूसरे को मार डाला है। आखिरकार, भगवान उन्हें खुद ही काट डालेंगे। और इसलिए, इस सब में न्याय का एक भयानक संदेश है।

तो, इस नकारात्मक संदेश, इस भयानक अभियोग के बाद, हम चक्र दो के अंत में क्या देखने की उम्मीद करते हैं? अधिक न्याय, दुःख, विलाप। हालाँकि, अध्याय 11 में जो कुछ है, जब इस्राएल एक बच्चा था, मैं उससे प्यार करता था। मिस्र से, मैंने अपने बेटे को बुलाया।

वे मुझसे दूर चले गए, लेकिन अध्याय 11, श्लोक 8 में, मैं उन्हें कैसे छोड़ सकता हूँ? और इसलिए मेरी करुणा मेरे भीतर वापस आ गई, और परमेश्वर द्वारा इस न्याय को पूरा करने के बाद, प्रभु कहते हैं, मैं परमेश्वर हूँ, मनुष्य नहीं, तुम्हारे बीच में पवित्र व्यक्ति हूँ, और मैं क्रोध में नहीं आऊँगा। तब वे प्रभु के पीछे चलेंगे। वह दहाड़ते समय सिंह की तरह दहाड़ेगा।

उसके बच्चे पश्चिम से काँपते हुए आएँगे। वे मिस्र से पक्षियों की तरह और अश्शूर की भूमि से कबूतरों की तरह काँपते हुए आएँगे, और मैं उन्हें उनके घरों में वापस भेज दूँगा, यहोवा की यही वाणी है। इसलिए अब हमारे पास परमेश्वर सिंह की तरह दहाड़ते हुए हैं, लेकिन यह इस बात का संकेत नहीं है कि परमेश्वर इस्राएल के लोगों को चीरने जा रहा है, जैसा कि आमोस की पुस्तक में है, या यहाँ तक कि होशे की पुस्तक के अन्य भागों में भी है, अब सिंह की दहाड़ अलार्म है, या यह लोगों को घर वापस आने के लिए बुलावा देने वाला संदेश है, और यह परमेश्वर की दहाड़ने वाली शक्ति और ताकत है जो अंततः लोगों को निर्वासन से वापस लौटने का कारण बनेगी।

ठीक है? इस्राएल के इतिहास की शुरुआत में, अध्याय 11, श्लोक 1, जब इस्राएल एक बच्चा था, मैंने उससे प्यार किया, और मिस्र से, मैंने अपने बेटे को बुलाया। परमेश्वर उन्हें मिस्र से बाहर लाया। परमेश्वर उन्हें वापस निर्वासन में भेजने जा रहा है, लेकिन अध्याय 11, श्लोक 11 में, वे मिस्र से पक्षियों की तरह और अश्शूर की भूमि से कबूतरों की तरह काँपते हुए आएँगे।

निर्वासन से वापसी एक दूसरा पलायन होगा, और भविष्यवक्ता, विशेष रूप से भविष्यवक्ता यशायाह, जो बात कहने जा रहे हैं, वह यह है कि दूसरा पलायन पहले पलायन से बेहतर होने जा रहा है क्योंकि प्रभु वास्तव में अपने लोगों को विभिन्न देशों से, मिस्र से, अश्शूर से, बेबीलोन से लाने जा रहे हैं, और प्रभु उन्हें वापस ले जाएँगे। प्रभु उन्हें धकेल देंगे। वे प्रभु के पास वापस नहीं लौटते हैं, लेकिन परमेश्वर अंततः उन्हें अपने पास वापस ले आएगा।

फिर से, इस सारे अभियोग के बीच, न्याय का एक भयानक संदेश है। राजा को काट दिया जाएगा, सैन्य हार होगी, लेकिन रिश्ते की बहाली होगी। इसके अलावा, इस अदालती कार्यवाही का उद्देश्य लोगों को प्रभु के पास वापस लाने का प्रयास करना है।

अगर परमेश्वर उन्हें नष्ट करना चाहता है, तो कार्यवाही की क्या ज़रूरत है? बस निर्णय ले आओ। लेकिन इस अदालती मामले के बीच में, परमेश्वर उन्हें सिर्फ जेल नहीं भेज रहा है। परमेश्वर अंततः उन्हें पश्चाताप करने के लिए मजबूर करने की कोशिश कर रहा है, लेकिन पहले वाचा के मुकदमे की तरह, इस्राएल के दिल इसके लिए तैयार नहीं हैं।

न्यायाधीश ने उन्हें सबूतों से पीटा। अध्याय 6-10 में, वे फिर भी नहीं सुनते। अध्याय 7, श्लोक 10 में यह कहा गया है, इस्राएल का अभिमान उसके सामने गवाही देता है।

इस्राएल बहुत घमंडी है, और वे अपने पाप में इतने अहंकारी हैं कि वे यह स्वीकार नहीं कर पाते कि वे प्रभु के प्रति विश्वासघाती रहे हैं। फिर भी वे अपने परमेश्वर यहोवा की ओर नहीं लौटते, और वे इन सब के लिए उसकी तलाश नहीं करते। ठीक है? इस्राएल प्रभु की ओर चाहे जिस तरह का भी रुख अपनाता है, चाहे वे परमेश्वर की ओर बढ़ने की जिस भी दिशा में आगे बढ़ने की कोशिश करें, अंततः वह गलत दिशा ही होती है।

अध्याय 7, श्लोक 14-16, यह कहते हैं: वे अपने दिल से मुझे पुकारते नहीं हैं; वे अपने बिस्तरों पर पड़े-पड़े रोते हैं। अनाज और दाखमधु के लिए वे अपने आपको घायल करते हैं, और मेरे विरुद्ध विद्रोह करते हैं। इसलिए पश्चाताप करने और परमेश्वर के पास वापस आने और अपने पापों को

स्वीकार करने और अपने तरीकों को संशोधित करने के बजाय, वे इसके बजाय मूर्तिपूजक अनुष्ठानों में संलग्न होते हैं।

और उसी तरह जैसे बाल के भविष्यवक्ता, जब वे माउंट कार्मेल पर एलिजा के साथ संघर्ष और प्रतियोगिता में शामिल होते हैं, जब उनके देवता उन्हें जवाब नहीं देते, तो याद रखें कि वे क्या करते हैं? वे खुद को काटते हैं, और खुद को घायल करते हैं। और उम्मीद है कि खून बहने, खुद को घायल करने और खुद को काटने से, वे अपने देवताओं के प्रति अपनी तत्परता और अपने जुनून को इस तरह से दर्शाएंगे कि देवता उन्हें जवाब देंगे। यही इस्राएली कर रहे हैं।

वे अपने बिस्तर पर पड़े-पड़े रो रहे हैं, वे अनाज और दाखमधु के लिए खुद को घायल कर रहे हैं, और इन सभी धार्मिक कार्यों को करने के बीच में, वे अंततः प्रभु के विरुद्ध विद्रोह कर रहे हैं। अध्याय 7, श्लोक 15। यद्यपि मैं उनकी भुजाओं को मजबूत करता हूँ, फिर भी वे मेरे विरुद्ध बुरी योजनाएँ बनाते हैं।

वे लौटते हैं, लेकिन ऊपर की ओर नहीं। वे विश्वासघाती नाव की तरह हैं। वे दिखाते हैं, वे लौटते हैं, लेकिन वे ऊपर की ओर परमेश्वर की ओर नहीं देखते।

वे इसके बजाय वापस लौट रहे हैं, चलो और अधिक बुतपरस्त अनुष्ठान करते हैं, चलो और अधिक बुतपरस्त अनुष्ठान करते हैं। ठीक है? तो, एक अभियोग है, लौटने से इनकार है, एक निर्णय है, फिर आशा का एक शब्द है। तीसरा चक्र, होशे की पुस्तक, उसी तरह समाप्त होने जा रही है।

एक तीसरा वाचा मुकदमा है, और मैं वास्तव में इस मुकदमे को अध्याय 11 की आयत 12 से शुरू होते हुए देखूंगा, और यह पुस्तक के अंत तक विस्तारित होता है। और फिर, हमारे पास वही बात है। हमारे पास अभियोग लगाने के विभिन्न तरीके हैं, जहाँ आरोप लगाया जाता है और फिर सज़ा की घोषणा की जाती है।

अंत में, अध्याय 14 में, पुनर्स्थापना का एक और वादा है जो पुस्तक में चल रहे इस विशाल नाटक का समाधान लाता है। ठीक है? जैसा कि हम वाचा के मुकदमे के सामने वाले भाग से शुरू करते हैं, एक औपचारिक अभियोग है, और यहाँ यह कहा गया है: एप्रैम ने मुझे झूठ से और इस्राएल के घराने ने छल से घेर लिया है।

ठीक है? फिर से, आइए वाचा के प्रति वफ़ादारी और निष्ठा के मुद्दे पर नज़र डालें। इस्राएल दोषी है, लेकिन यहूदा अभी भी परमेश्वर के साथ चलता है और पवित्र के प्रति वफ़ादार है। तो, यहाँ एक विरोधाभास है।

यहूदा अभी एप्रैम जितना दोषी नहीं है। होशे की किताब में अन्य जगहें हैं जहाँ यहूदा को इस्राएल के पापों में शामिल किया जाएगा। लेकिन यहूदा को कुछ समय के लिए बख्शा जाएगा क्योंकि उनके पाप अभी इस्राएल के पापों जितने गंभीर नहीं हैं।

और यहाँ औपचारिक अभियोग है। एप्रैम हवा पर पलता है और पूरे दिन पूर्वी हवा का पीछा करता है। वे झूठ और हिंसा को बढ़ाते हैं।

वे अश्वर के साथ एक वाचा बनाते हैं, और तेल मिस्र ले जाया जाता है। और इस तरह, फिर से, एक और अभियोग है। निर्णय का एक और कथन है।

यह वही है जो हमें अध्याय 12 और अध्याय 13 में मिलता है, जैसा कि अन्य वाचा मुकदमों और होशे 4-14 में अन्य चक्रों में है। परमेश्वर फिर से लोगों का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश कर रहा है, न केवल उन पर सजा सुनाने के लिए, न केवल उन्हें कैद करने और उन्हें दूर करने के लिए, बल्कि अंततः उन्हें पश्चाताप करने और वापस लौटने के लिए कहने के लिए। इसलिए अध्याय 12, श्लोक 5 कहता है, इसलिए तुम, अपने परमेश्वर की मदद से, वापस आओ।

भगवान आपको ऐसा करने में मदद भी करेंगे। अगर आप भगवान की ओर लौटने और सही काम करने का संकल्प लेंगे, तो भगवान आपकी मदद करेंगे। प्रेम और न्याय को मजबूती से थामे रहें और अपने भगवान की प्रतीक्षा करते रहें।

लेकिन जैसा कि उन्होंने अपने पूरे इतिहास में किया है, पश्चाताप नहीं होने वाला है। वे परमेश्वर की ओर नहीं मुड़ने वाले हैं। वे बस अपने पापी तरीकों को जारी रखने वाले हैं। इस्राएल के पूरे इतिहास में, अध्याय 13, श्लोक 5, यह मैं ही था जो तुम्हें जंगल में, सूखे की भूमि में जानता था।

लेकिन जब उन्होंने चरा लिया, तो वे तृप्त हो गए। वे तृप्त हो गए, और उनका हृदय फूल गया, इसलिए वे मुझे भूल गए। ठीक है, तो यह अंतिम वाचा मुकदमा कुछ विशेष तरीकों से इस्राएल के पिछले इतिहास पर ध्यान केंद्रित करने जा रहा है।

और परमेश्वर की आशीषों और वाचा की वफ़ादारी के प्रति अवज्ञा और अनुचित प्रतिक्रिया का यह लंबा इतिहास है। परमेश्वर ने उन्हें मिस्र से बाहर निकाला। परमेश्वर ने उन्हें यह अद्भुत, भव्य भूमि दी जो दूध और शहद से बह रही थी।

इस्राएल ने इस पर क्या प्रतिक्रिया दी है? उन्होंने ठीक वही किया जो मूसा ने उन्हें न करने की चेतावनी दी थी। जब तुम देश में जाओ और घरों का आनंद लो और फलों और कृषि और लाभों और आशीषों का आनंद लो और दूध और शहद से बहने वाली भूमि का आनंद लो, तो सावधान रहो। सावधान रहो कि तुम मुझे न भूलो।

होशे यहाँ विशेष रूप से क्या कहता है? वे मुझे भूल गए हैं। इसलिए प्रभु कहते हैं, मैं उनके लिए सिंह के समान हूँ, और चीते के समान मार्ग के किनारे छिपकर रहूँगा। मैं उन पर शावकों से छिनी गई रीछनी के समान टूट पड़ूँगा, और उनकी छाती फाड़ डालूँगा।

मैं उन्हें शेर की तरह खा जाऊँगा और जंगली जानवर की तरह उन्हें चीर दूँगा। तो फिर से, अब हम जंगली जानवरों की छवि पर वापस आ गए हैं जिन्हें शिकार के जानवरों के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है और इस शक्तिशाली ईश्वर के लिए छवियों के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है

जिससे उन्हें डरने की ज़रूरत है क्योंकि ईश्वर उनका न्याय करने वाला है। इसके अंत में, प्रभु कुछ सवाल उठाने जा रहे हैं।

किसी औपचारिक अदालती मामले या विवाद में, अक्सर सवाल पूछने से प्रतिवादी को चिंतन करने और प्रभु के मामले को स्थापित करने का मौका मिल सकता है। और होशे अध्याय 13, श्लोक 14 में, प्रभु कुछ अलंकारिक प्रश्न पूछने जा रहे हैं। और प्रभु यह कहने जा रहे हैं, क्या मैं उन्हें अधोलोक की शक्ति से छुड़ाऊँ और क्या मैं उन्हें मृत्यु से छुड़ाऊँ? हे मृत्यु, तेरी विपत्तियाँ कहाँ हैं? हे अधोलोक, तेरा डंक कहाँ है? और फिर यह कहता है, करुणा मेरी आँखों से छिपी हुई है।

अब, इसे समझने में हमारी समस्या यह है कि हम तुरंत सोचते हैं कि पॉल 1 कुरिन्थियों अध्याय 15 में इस अंश का उपयोग कैसे करता है। पॉल इन शब्दों को लेता है, और उसका मन और दिल पुराने नियम से भर जाता है। इसलिए यह स्वाभाविक है कि वह इसे उद्धृत करने जा रहा है और हर जगह इसका संकेत दे रहा है।

लेकिन जब पॉल पुनरुत्थान के बारे में बात करता है, तो वह इस अंश का सकारात्मक तरीके से उपयोग करेगा। और जब पॉल कहता है, हे मृत्यु, तेरा डंक कहाँ है? हे कब्र, तेरी जीत कहाँ है? वह मृत्यु के बारे में बकवास कर रहा है और कह रहा है, हे, अंततः मृत्यु, तुम जीत नहीं पाओगे क्योंकि यीशु का पुनरुत्थान हमें जीत दिलाता है। हालाँकि, होशे में इस कल्पना का बिल्कुल विपरीत तरीके से उपयोग किया जा रहा है।

अधोलोक की शक्ति से छुड़ाऊँ ? हे मृत्यु, तेरी विपत्तियाँ कहाँ हैं? हे अधोलोक, तेरा डंक कहाँ है? इसका उत्तर यह है कि वे हर जगह हैं। और कोई उद्धार नहीं है क्योंकि इस औपचारिक न्यायालय की कार्यवाही के अंत में, इस्राएल दोषी है, और परमेश्वर की करुणा छिपी हुई है। अध्याय 13 में अंतिम कथन, सामरिया को अपना अपराध सहना होगा क्योंकि उसने अपने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया है।

वे तलवार से मारे जाएँगे, उनके बच्चे टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे, और उनकी गर्भवती स्त्रियाँ चीर दी जाएँगी। यह एक शक्तिशाली कथन है, लेकिन यह औपचारिक अभियोग का एक उपयुक्त निष्कर्ष है। लेकिन फिर से, जैसा कि हमने होशे की पुस्तक में इन सभी अदालती मामलों में देखा है, आशा का एक अंतिम शब्द है।

और अब आशा के उस वचन को अध्याय 14 के सभी भागों में विस्तारित किया गया है। और प्रभु अध्याय 14, श्लोक 4 में कहते हैं, और मैं उनके धर्मत्याग को ठीक कर दूँगा, मैं उनसे मुक्त रूप से प्रेम करूँगा, क्योंकि मेरा क्रोध उनसे दूर हो गया है। और इसलिए, प्रेम का मुद्दा और प्रेम की समस्या जहाँ इस्राएल होशे की पुस्तक में परमेश्वर को छोड़कर हर चीज को अपना दिल दे रहा है, अंततः, यह सही होने जा रहा है क्योंकि परमेश्वर उनके धर्मत्याग को ठीक कर देगा।

तो उम्मीद है कि अब जब आप होशे 4-14 को पढ़ेंगे, तो इसे केवल बार-बार आने वाले विषयों की एक उलझी हुई श्रृंखला के रूप में देखने के बजाय, जिसका उल्लेख भविष्यवक्ता कर रहा है और

वापस आ रहा है, वास्तव में इसका मतलब समझना मुश्किल है, उम्मीद है कि अब आपको इस पुस्तक को कैसे एक साथ रखा गया है, इसकी थोड़ी बेहतर समझ है। अंततः, इस्राएल के लोगों के साथ जो होने वाला है, वह न्याय होने वाला है, और निर्वासन होने वाला है। अध्याय 13, श्लोक 14, सामरिया को अपने अपराध का बोझ उठाना पड़ेगा, उसने हमारे परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध विद्रोह किया है, वे तलवार से मारे जाएँगे, उनके छोटे बच्चे टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे, और उनकी गर्भवती स्त्रियाँ चीर दी जाएँगी।

वर्ष 725-722 में उत्तरी राज्य के असीरियनों के हाथों पतन के साथ यही हुआ। पुराने नियम में, राजाओं की पुस्तक में, आप उत्तरी राज्य के पतन का रिकॉर्ड पढ़ सकते हैं, और राजाओं की पुस्तक कहती है कि ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उन्होंने अपने राजाओं की बातों को नहीं सुना। प्राचीन निकट पूर्व के इतिहास में बाहरी साक्ष्य भी इस बात की पुष्टि करते हैं कि यह निर्णय हुआ था।

जब आप राजाओं और इस्राएल के भविष्यवक्ताओं के बारे में पढ़ते हैं तो यह वाकई दिलचस्प होता है कि प्राचीन निकट पूर्वी शिलालेख और अभिलेख और इतिहास हमारे लिए बताते हैं और पुष्टि करते हैं कि बाइबल के अभिलेख में क्या हो रहा है। असीरियन राजा सरगोन द्वितीय के इतिहास में, और दो असीरियन राजा, शालमनेसर वी, और सरगोन द्वितीय हैं, जो सामरिया की घेराबंदी करने जा रहे हैं जो 725-722 से तीन साल तक चलती है। इस कहानी का अंत सरगोन के इतिहास में पाया जाता है, और यहाँ राजा क्या कहता है।

सामरिया के शासक, इस्राएल के राजा ने अपने करों का भुगतान नहीं किया और सामरिया को असीरिया से स्वतंत्र घोषित कर दिया। ईश्वरीय सभा द्वारा मुझे दी गई शक्ति से, मैंने सामरिया और उसके वाचा के साथी को जीत लिया और 27,290 युद्ध बंदियों को उनके रथों के साथ ले लिया। और इसलिए, यह न्याय की चेतावनियों की परिणति है जो हमें आमोस और होशे दोनों द्वारा दी गई हैं।

प्रभु का वचन पूरा हुआ, और परमेश्वर ने 40 वर्षों तक आमोस और होशे के उपदेशों के माध्यम से उन्हें चेतावनी देने के लिए हर संभव प्रयास किया, लेकिन लोगों ने उनकी बात नहीं सुनी। इसके परिणामस्वरूप, निर्वासन होता है। यही कारण है कि पुस्तक की शुरुआत में यह चौंकाने वाला रूपक होना चाहिए।

यही कारण है कि पैगंबर को कुछ ऐसा करने के लिए कहा जाता है जो हमें नैतिक रूप से बुरा लगता है। जाओ और एक बदचलन औरत से शादी करो। यही कारण है कि पैगंबर को लोगों को अदालत में लाना पड़ता है और उसके खिलाफ औपचारिक आरोप लगाने पड़ते हैं।

वाचा इतनी हताश करने वाली है। ठीक है, अब, जैसा कि हम अध्याय 4 से 14 को देखते हैं, और जैसा कि हम इन वाचा मुकदमों के माध्यम से अपना काम कर रहे हैं, मैं इस व्याख्यान में, जैसा कि हम इसे समाप्त करते हैं और इस पाठ को देखते हैं, चार या पाँच प्रमुख अभियोग हैं। इस्राएल पर प्रभु के प्रति विश्वासघात करने का आरोप लगाया गया है।

इस्राएल पर एक विश्वासघाती वाचा भागीदार के रूप में अभियोग लगाया गया है। इस्राएल ने विशेष रूप से क्या किया है जिसके कारण उन पर यह आरोप लगाया गया है? पहला यह है कि भविष्यवक्ता इस्राएल से कहने जा रहा है कि उन्होंने परमेश्वर के प्रति हेसद का अभ्यास नहीं किया। अध्याय 4, श्लोक 1 में, प्रभु का देश के निवासियों के साथ विवाद है।

कोई वफ़ादारी या अटल प्रेम नहीं है। हेसद एक गुण या विशेषता थी जिसे परमेश्वर ने इस्राएल को दिखाया था। वाचा के भीतर, परमेश्वर ने एक पारस्परिक प्रतिक्रिया की अपेक्षा की जहाँ उन्होंने प्रभु और एक दूसरे के प्रति वफ़ादारी का प्रदर्शन किया।

ऐसा कुछ भी नहीं था। और इसलिए, नबी कहने जा रहा है, मेरे लोग ज्ञान की कमी के कारण नष्ट हो गए हैं क्योंकि तुमने ज्ञान को अस्वीकार कर दिया है। मैं उस पुजारी को अस्वीकार करता हूँ जिसे मैंने अपना नेता बनने के लिए बुलाया था।

इसलिए, ऐसे कई स्थान हैं जहाँ इस्राएल पर वाचा के संदर्भ में हेसेड की कमी का आरोप लगाया गया है। अध्याय 10, श्लोक 12, लोगों के लिए एक आह्वान है: अपने लिए धार्मिकता बोओ और दृढ़ प्रेम की फसल काटो। अपनी परती भूमि को जोतो और प्रभु की खोज करो।

यदि वे ईश्वर की खोज करते हैं, यदि वे धार्मिक होने का दावा करते हैं, और यदि वे ईश्वर की खोज करने वाले लोग होने का दावा करते हैं, तो वे ईश्वर के प्रति हेसेड का अभ्यास करके ईश्वर की खोज करेंगे। इसके साथ ही, एक संबंधित दूसरा आरोप यह है कि लोगों ने ईश्वर की आज्ञाओं का पालन न करके उसके प्रति बेवफ़ाई की है। और याद रखें, अध्याय 4, श्लोक 1 से 3 में शुरुआती आरोप फिर से यही है कि उन्होंने हेसेड का अभ्यास नहीं किया है।

खैर, उन्होंने ऐसा कैसे किया? परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन न करके। दस आज्ञाओं में से पाँच मूसा की वाचा और मूसा के कानून का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो कि उन पर आरोपित की गई चीज़ें हैं। और फिर, उन्होंने आज्ञाओं का पालन न करने का विशिष्ट कारण यह है कि उनके पुजारियों ने उन आज्ञाओं को सिखाने के महत्व पर ज़ोर नहीं दिया है।

मेरे लोग ज्ञान की कमी के कारण नष्ट हो गए हैं। और क्योंकि याजकों ने ज्ञान को अस्वीकार कर दिया है, इसलिए प्रभु उन्हें नेता बनने से अस्वीकार करने जा रहे हैं। उन्हें यह कानून सिखाने की जिम्मेदारी थी ताकि लोगों को पता चले कि उनकी जिम्मेदारियाँ क्या थीं, और उन्होंने ऐसा नहीं किया।

श्लोक 10 कहता है... मुझे खेद है, यह गलत संदर्भ है। मैं अध्याय 6, श्लोक 7 पर जाता हूँ, जिसे हम पहले ही देख चुके हैं। आदम की तरह, उन्होंने वाचा का उल्लंघन किया, और उन्होंने मेरे साथ विश्वासघात किया है।

अध्याय 7, श्लोक 1 से 3. जब मैं इस्राएल को चंगा करता हूँ, तब एप्रैम का अधर्म और सामरिया के बुरे काम प्रकट होते हैं। वे छल करते हैं। चोर सेंध लगाता है।

डाकू बाहर से हमला करते हैं। लेकिन वे यह नहीं सोचते कि मुझे उनकी सारी बुराइयाँ याद हैं, और उनके काम उन्हें घेरे हुए हैं, और वे मेरे सामने हैं। तो, इस्राएल ने ऐसा क्या किया है जिससे परमेश्वर का अपमान हुआ है? मुख्य रूप से, उन्होंने आज्ञाओं का पालन नहीं किया है।

और मुझे लगता है कि आमोस की किताब में जो कुछ हुआ है, उसी तरह लोग विरोध के साथ वापस आ गए होंगे। खैर, हमने अपनी बलि दी है। हमने अपने अनुष्ठान किए हैं।

हमने वे सभी काम किए हैं जो परमेश्वर ने हमें करने के लिए कहा था। लेकिन प्रभु वापस आकर कहेंगे, अच्छा, न्याय के बारे में क्या? धार्मिकता के बारे में क्या? उस तरह की जीवनशैली जीने के बारे में क्या जो परमेश्वर चाहता था कि तुम जियो? एक और अंश जो उन्हें कानून का पालन न करने और परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन न करने के लिए दोषी ठहराता है, वह है होशे 8, श्लोक 12। यदि मैं उसके लिए लिखूँ, तो प्रभु कहते हैं, यदि मैं इस्राएल के लोगों के लिए दस हज़ार की संख्या में अपने नियम लिखूँ, तो उन्हें एक अजीब बात माना जाएगा।

जहाँ तक मेरे बलिदानों की बात है, वे मांस चढ़ाते हैं और उसे खाते हैं, लेकिन यहोवा उन्हें स्वीकार नहीं करता। अब वह उनके अधर्म को याद रखेगा, उनके पापों को दण्ड देगा, और उन्हें मिस्र वापस भेज देगा। यहोवा, या इस्राएल, अपने निर्माता को भूल गया है और उसने उनके महल बनाए हैं।

प्रभु कहते हैं, मैं इन लोगों के लिए दस हज़ार नियम लिख सकता हूँ, और फिर भी यह पर्याप्त नहीं होगा क्योंकि वे उनका पालन नहीं करेंगे। वे अपने बलिदान चढ़ाते हैं, लेकिन प्रभु उन्हें स्वीकार नहीं करते क्योंकि उनके अनुष्ठानों के साथ आज्ञाकारिता की जीवनशैली भी होनी चाहिए। हमने इस पाठ में होशे 4 से 14 के संदेश का परिचय दिया है, और हमने देखा है कि इस्राएल के लोगों के खिलाफ़ औपचारिक वाचा के मुकदमों की एक श्रृंखला है।

जब हम पवित्रशास्त्र के इस भाग को देखते हैं, तो मुझे लगता है कि हमें परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते की प्रकृति की भी याद आती है। परमेश्वर की कृपा हमेशा इस तरह का जीवन जीने की ज़िम्मेदारी लेकर आती है, जैसा कि अनुग्रह हमें जीने में सक्षम बनाता है। हम सिर्फ़ परमेश्वर का आशीर्वाद प्राप्त नहीं करते।

हमारे लिए परमेश्वर का प्रेम बिना किसी शर्त के है, लेकिन उसके आशीर्वाद का अनुभव करना, इस्राएल के लिए भी, परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने और उन्हें मानने का दायित्व है। इस्राएल ने विशेष रूप से हेसेड का पालन न करके और उसकी आज्ञाओं का पालन न करके प्रभु की आज्ञा का पालन नहीं किया है। हम अपने अगले पाठ में अन्य विशिष्ट अभियोगों के बारे में जानेंगे, और हमें फिर से याद दिलाया जाएगा कि जब भी लोगों के जीवन में परमेश्वर की कृपा बरसती है, तो हमेशा यह अपेक्षा की जाती है कि आज्ञाकारिता की जीवनशैली उससे प्रवाहित होगी।

जब भी परमेश्वर हमारे जीवन में अनुग्रह का निवेश करता है, तो हमेशा यह मांग होती है कि उस अनुग्रह का बदला प्रेम और भक्ति, विश्वासयोग्यता और प्रभु के प्रति आज्ञाकारिता के जीवन से

दिया जाए। यही पुराने नियम का संदेश है, और यह नए नियम में भी लागू होता है।

यह डॉ. गैरी येट्स की पुस्तक 12 पर उनके व्याख्यान श्रृंखला में है। यह व्याख्यान 13 है, इस्राएल की आध्यात्मिक बेवफाई, होशे 4-14, भाग 1।